वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 454
ISBN-978-93-84003-65-4

श्री पद्मप्रभ विधान

–रचयित्री–
जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, दिव्यशक्ति,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ भगवान के मोक्षकल्याणक फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी (8 फरवरी 2015) के शुभ अवसर पर 'श्री गौतम गणधर वर्ष' के अन्तर्गत प्रकाशित।

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वी. नि. सं. 2541	मूल्य
2200 प्रतियाँ	फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी (8 फरवरी 2015)	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात् , ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

जैन परम्परा में उपयोग तीन प्रकार का माना गया है। अशुभोपयोग, शुभोपयोग एवं शुद्धोपयोग। इन तीनों उपयोगों में से कोई न कोई उपयोग प्रतिक्षण जीव में चला ही करता है, जिसमें से अशुभोपयोग तो दुर्गति का कारण पापरूप है, जो सर्वथा हेय है। बात है उपादेयता की, शेष दोनों शुभोपयोग व शुद्धोपयोग उपादेय हैं। चूँकि गृहस्थ श्रावक के शुभोपयोग के अलावा शुद्धोपयोग हो नहीं सकता इसलिए शुभोपयोग ही उपादेय ठहरता है। शुद्धोपयोग वीतराग चारित्र से अविनाभावी है और वीतरागी चारित्र निर्ग्रंथ मुनियों के ही संभव है अतः श्रावकों को प्रयत्नपूर्वक शुभोपयोग की भावना में ही प्रवृत्त होना चाहिए। पूजन पाठ, सामायिक, दान आदि समस्त धार्मिक क्रियायें पुण्यरूप हैं और शुभोपयोग हैं, इसलिए श्रावकों द्वारा शांति विधान, सिद्धचक्र विधान आदि मण्डल विधान करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। श्रावकों के षट् आवश्यक कार्यों में देवपूजा प्रथम आवश्यक कार्य है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, शांतिविधान, ऋषिमण्डल आदि छोटे-बड़े 100 विधानों की एवं 300 ग्रंथों की रचना की हैं। जिनमें से अभी कुछ विधान एवं ग्रंथ अप्रकाशित हैं। विधानों की श्रृंखला में यह तीर्थंकर **''श्री पद्मप्रभ विधान''** रचकर नूतनकृति के रूप में पूज्य माताजी ने हम सबको प्रदान किया है। यह विधान सभी रोग, शोक, दुख, दारिद्र्य को दूर करके सुख को प्रदान करने वाला है। भक्ति करते-करते भक्त जब एक दिन भगवान बन सकता है तो भक्ति से छोटे-छोटे कार्य तो सिद्ध हो ही जाएंगे। यह नूतन विधान सभी के लिए मंगलकारी हो, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें एवं वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

वर्तमान चौबीसी के छठे तीर्थंकर श्री पद्मप्रभु का जन्म कौशाम्बी नगरी में कार्तिक कृष्णा तेरस को हुआ। इस ही तिथि में भगवान ने दीक्षा ग्रहण कर तपरूपी लक्ष्मी का आलिंगन किया। चैत्र सुदी पूर्णिमा को भगवान को केवलज्ञान हुआ और तत्क्षण ही कुबेर ने अर्धनिमिष मात्र में समवसरण की रचना कर दी। पृथ्वी से 5000 धनुष अर्थात् 20,000 हाथ ऊपर अधर आकाश में भगवान समवसरण में गंधकुटी में विराजमान हो गएं। फाल्गुन कृ. चतुर्थी को सम्मेदशिखर पर्वत से मोक्षधाम को प्राप्त कर लिया। ऐसे पंचकल्याणक की महिमा से मण्डित तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ भगवान हम सभी का मंगल करें।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुखश्री ज्ञानमती माताजी ने चौबीस तीर्थंकरों के गुणानुवादरूप उनकी संस्कृत में, पद्य में स्तुति की रचना एवं सभी तीर्थंकरों के विधानों की रचना कर दी हैं। जिनमें से अभी कुछ तीर्थंकर के विधान अप्रकाशित हैं, वे भी शीघ्र ही प्रकाशित हो रहे हैं।

इस **''श्री पद्मप्रभ विधान''** में पूज्य माताजी ने सर्वप्रथम मंगलाचरण करते हुए श्री समन्त भद्राचार्य विरचित श्री पद्मप्रभ स्तोत्र और उसका पद्यानुवाद भी दिया है। इसके बाद स्वरचित श्री पद्मप्रभ स्तुति दी है। स्तुति के बाद अर्हंत पूजा है। फिर श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर की पूजा, पंचकल्याणक के अर्घ्य एवं 108 अर्घ्य हैं। कई छन्दों का प्रयोग करते हुए 108 अर्घ्य में से एक अर्घ्य में पूज्य माताजी ने त्रिभंगी छंद में लिखा है—

हे नाथ 'सुतनु' हो, उत्तम तनु हो, अतिशय दीप्ती, धारक हो।
हन आधी व्याधी, मेट उपाधी, पूर्ण निरामय कारक हो।।
हे पद्मप्रभू तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।

108 अर्घ्य के बाद जयमाला है। जयमाला में सिद्धान्त ज्ञान के साथ-साथ भगवान के जीवन चरित्र एवं समवसरण की सभा का सुन्दन वर्णन है। पद्मप्रभ भगवान की ऊँचाई दो सौ पचास धनुष, आयु तीस लाख वर्ष पूर्व की एवं पद्मराग मणि के समान देदीप्यमान लाल वर्ण का शरीर था। भगवान का चिन्ह लाल-

कमल था। भगवान के समवसरण में वज्रचामर आदि एक सौ दस गणधर थे। तीन लाख तीस हजार साधु एवं चार लाख बीस हजार आर्यिकाएँ सुशोभित थीं। प्रायः सभी तीर्थंकरों के समवसरण में मुनियों से आर्यिकाओं की संख्या ज्यादा रही है।

जयमाला के अंत में पूज्य माताजी ने लिखा है—

जो पद्मप्रभ तीर्थेश की, अर्चा करें अति चाव से।
वे मन कमल विकसित करें, सम्यक्त्व ज्योति प्रभाव से।।
संसार सागर पार करके, स्वात्म निधि को पावते।
'सज्ज्ञानमति' रवि किरण से, त्रिभुवन त्रिकाल प्रकाशते।।

अर्थात् जो अत्यन्त भक्तिभावपूर्वक भगवान की पूजा करते हैं वे सम्यग्दर्शन के प्रभाव से मनरूपी कमल को विकसित कर संसार सागर को पार करके आत्मनिधि को प्राप्त कर लेते हैं और फिर केवलज्ञानरूपी प्रकाश से तीनों लोकों को प्रकाशित करते हैं।

जयमाला के बाद प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद मेरे द्वारा रचित कौशाम्बी तीर्थ पूजा है। फिर श्री पद्मप्रभ की आरती एवं कौशाम्बी तीर्थ की मंगल आरती है।

इस विधान में कुल पूजा 3, अर्घ्य 108, 1 पूर्णार्घ्य एवं 3 जयमाला है।

इस विधान को करने, कराने वाले सभी भव्य जीव जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि को प्राप्त करें यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें जिनेन्द्रदेव से यही मंगल कामना है।

卐

दो शब्द

—आर्यिका सुव्रतमती

स्वदोष शान्त्यावहितात्मशांतिः शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद् भवक्लेश भयोपशान्त्यैः शांतिर्जिनो मे भगवान्शरण्यः।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि, वर्तमान में पीछीधारी सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित, परमपूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना की है। प्रतिक्षण पूज्य माताजी की यह भावना रहती है कि किस तरह से मैं वर्तमान में सभी भव्य जीवों को आगम के ज्ञान से, पूर्वाचार्यों की वाणी से सिंचित करूँ।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम है। जब लोग पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों की पंक्तियों को पढ़ते हैं तो वे भक्ति में भाव विभोर हो जाते हैं। भक्ति में उनके पैर थिरकने लग जाते हैं और वे भक्ति भाव से पूजा कर असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं। जब भगवान के दर्शनमात्र से पाप कर्म निर्जीर्ण हो जाते हैं तो उनकी पूजा, भक्ति करने से तो विशेष पुण्य फल प्राप्त होता है।

धवला पु.–6 में आचार्य श्री वीरसेनस्वामी ने जिनबिम्ब दर्शन के महत्त्व का कितना सुन्दर वर्णन किया है–

दर्शनेन जिनेन्द्राणां पापसंघातकुंजरम्।
शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्रहतो यथा।।

अर्थात् जिनेन्द्रों के दर्शन से पापसंघातरूपी कुंजर के सौ टुकड़े हो जाते हैं, जिस प्रकार कि वज्र के आघात से पर्वत के सौ टुकड़े हो जाते हैं।

देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति, पूजा विशेष फल को देने वाली है। पूज्य माताजी की वाणी जिनवाणी है। लेखनी में सरस्वती का वास है। जिनागम का सार बताने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों पर 'सिद्धान्तचिन्तामणि' नाम की संस्कृत टीका लिखने वाली, राष्ट्रगौरव, युगनायिका, सिद्धान्तचक्रेश्वरी, वाग्देवी, डी. लिट्, दिव्यशक्ति आदि अनके उपाधियों से अलंकृत पूज्य माताजी इस युग के लिए वरदान हैं। इस विधान की प्रूफ रीडिंग के माध्यम से मुझे जो स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ है, वह मेरे भव भ्रमण को दूर का शीघ्र ही श्रुतज्ञान की प्राप्ति करावे, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
1. मंगलाचरण	1
2. श्री पद्मप्रभ स्तोत्र (पद्यानुवाद सहित)	1
3. श्री पद्मप्रभु स्तुति	3
4. अर्हंत पूजा	4
5. तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ जिनपूजा	9
6. पंचकल्याणक अर्घ्य	10
7. अथ 108 अर्घ्य	12
8. जयमाला	26
9. प्रशस्ति	29
10. कौशाम्बी तीर्थ पूजा	30
11. भगवान श्री पद्मप्रभ की आरती	36
12. कौशाम्बी तीर्थ की आरती	37
13. भजन-पद्मचिन्ह युत पद्मप्रभु के...........	39
14. भजन-पंखिड़ा तू उड़ के जाना.....	40

मण्डल विधान का नक्शा

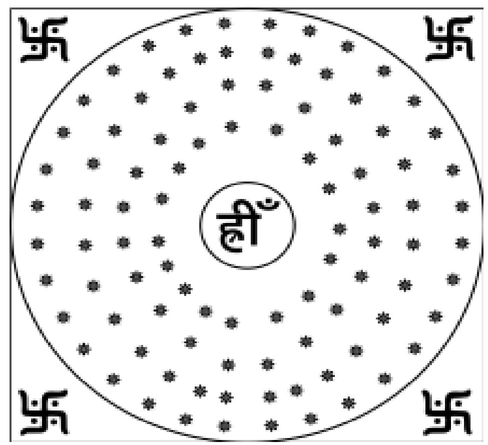

कुल पूजा–3, अर्घ्य 108, पूर्णार्घ्य–1, जयमाला–3।

श्री पद्मप्रभ विधान

मंगलाचरण

मुक्तिपद्मासुकान्ताय, पद्मवर्ण! नमोऽस्तु ते।
पद्मप्रभजिनेंद्राय, निजलक्ष्म्यै नमो नमः।।1।।

श्रीपद्मप्रभ स्तोत्र

(श्रीसमन्तभद्राचार्य–विरचितं)

पद्मप्रभःपद्म-पलाशलेश्यः, पद्मालया-लिंगित-चारुमूर्तिः।
बभौ भवान् भव्य-पयोरुहाणां, पद्मा-कराणा-मिव पद्मबन्धुः।।1।।

बभार पद्मां च सरस्वतीं च, भवान्पुरस्तात्प्रति-मुक्तिलक्ष्म्याः।
सरस्वती-मेव समग्रशोभां, सर्वज्ञ-लक्ष्मीं ज्वलितां विमुक्तः।।2।।

शरीर-रश्मि-प्रसरः प्रभोस्ते, बालार्क-रश्मिच्छवि-रालिलेप।
नरामरा-कीर्णसभां प्रभावच्छैलस्य पद्माभ-मणेः स्वसानुम्।।3।।

नभस्तलं पल्लव-यन्निव त्वं सहस्रपत्राम्बुज-गर्भचारैः।
पादाम्बुजैः पातित-मोहदर्पो भूमौ प्रजानां विजहर्थ भूत्यै।।4।।

गुणाम्बुधे-र्विप्रुष-मप्यजस्रं, नाखण्डलः स्तोतुमलं तवर्षेः।
प्रागेव मादृक्किमुतातिभक्ति-र्मां बाल-मालापयतीद-मित्थम्।।5।।

पद्यानुवाद (गणिनी ज्ञानमती)

हे पद्मप्रभो! आप देह लालकमल सम।
अन्तर व बाह्य श्री से स्पर्शित आप तन।।
जैसे रवी कमल समूह को खिला रहे।
वैसे ही आप भव्यकमल को खिला रहे।।1।।
प्रभु आपने शिव से प्रथम अर्हंत दशा में।
लक्ष्मी व सरस्वती उभय के पती हुए।।
या समवसरणयुत सरस्वती को धरा।
फिर विगतकर्म उत्तम सर्वज्ञश्री वरा।।2।।
प्रातः रवी किरण सदृश छवि आपकी प्रभो!
तव देहकांति का प्रसार व्याप रहा भो।।
नरसुरगणों से सहित सभा को प्रकाशता।
जिस विध से पद्ममणी गिरि के तट को भासता।।3।।
हे नाथ! आप सहस्रदल कमल पे पग धरें।
तव पदकमल आकाश को ही पल्लवित करें।।
तुम कामदेव मद विनाश करके भूमि पे।
सब जन के विभव हेतु श्रीविहार किये थे।।4।।
तव गुणसमुद्र की हे ऋषे! एक बिन्दु की।
नहिं आज तक भी स्तुति कर सका इन्द्र भी।।
फिर मुझ सदृश कैसे भला कर सकता स्तुती?
अति भक्ति ही मुझ अज्ञ को बुलवा रही कुछ भी।।5।।

श्री पद्मप्रभ स्तुति

तव विश्ववंद्य चरणारविंद, संकल्पमात्र शुभ फलदायक।
गणधर मुनिगण नुत देव! सदा, मनवचतन से प्रणमूं सुखप्रद।।
तव पादयुगल की भक्ति से, मानव संसार जलधि तिरते।
पद्मा से आलिंगित मूर्ति, पद्मप्रभ! मुझको सम कीजे।।1।।

कौशाम्बी के नृप 'धरण' पिता, औ प्रसू सुसीमा ख्यात जगत्।
इक्ष्वाकुवंश के ओ भास्कर!, पद्मा के आलय तव पदयुग।।
इक सहस हाथ ऊँचा तनु था, औ तीस लक्ष पूर्वायु थी।
प्रभु लाल कमल सम देह कांति, औ लाल कमल था चिह्न सही।।2।।

प्रभु माघवदी षष्ठी तिथि में, गर्भागम मंगल प्राप्त किया।
कार्तिक कृष्णा[1] तेरस के दिन, त्रैलोक्य विभाकर उदित हुआ।।
उस ही तिथि में तप लक्ष्मी से, आलिंगित पृथ्वी पर विहरे।
सित चैत पूर्णिमा के दिन ही, निज ज्ञान पूर्ण करके निखरे।।3।।

फाल्गुन वदि चौथ दिवस मुक्ति, लक्ष्मी के साथ निवास किया।
कृतकृत्य निरंजन सिद्ध हुए, निज आत्मजनित पीयूष पिया।।
मेरे मन के सब ही दुख को, निश्चित तुमने जाना भगवन्।
अब शीघ्र हरो दुख 'ज्ञानमती', श्री मम मुझको देना भगवन्।।4।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

---

1. उत्तरपुराण में वदि तेरस है।

पूजा नं. 1

अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंक पंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुचि से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तू।
पीयूष तुल्य चरु लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नी विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।
मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बाहू हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।

जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सौ हैं।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसु मंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चउ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभू सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा–

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।1।।

।इत्याशीर्वादः।

पूजा नं. 2

तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ जिनपूजा

–अथ स्थापना –

पद्मप्रभू जिन मुक्तिरमा के नाथ हैं।
श्री आनन्त्य चतुष्टय सुगुण सनाथ हैं।।
गणधर मुनिगण हृदय कमल में धारते।
आह्वानन कर जजत कर्म संहारते।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टकं –चौपाई छंद –

कर्म पंक प्रक्षालन काज, जल से पूजूँ जिन चरणाब्ज।।
पद्मप्रभू जिनवर पदपद्म, पूजत पाऊँ निज सुखसद्म।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन घिसूँ कपूर मिलाय, पूजूँ आप चरण सुखदाय।।
पद्मप्रभू जिनवर पदपद्म, पूजत पाऊँ निज सुखसद्म।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र किरण सम तंदुल श्वेत, पुंज चढ़ाऊँ निज पद हेत।।
पद्मप्रभू जिनवर पदपद्म, पूजत पाऊँ निज सुखसद्म।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वकुल कमल सुम हरसिंगार, चरण चढ़ाऊँ हर्ष अपार।।
पद्मप्रभू जिनवर पदपद्म, पूजत पाऊँ निज सुखसद्म।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद गुझिया पकवान, तुम्हें चढ़ाऊँ भवदुःख हान।।
पद्मप्रभू जिनवर पदपद्म, पूजत पाऊँ निज सुखसद्म।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ज्योति करे उद्योत, पूजत ही हो निज प्रद्योत।।
पद्मप्रभू जिनवर पदपद्म, पूजत पाऊँ निज सुखसद्म।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांग अग्नि में ज्वाल, दुरित कर्म जलते तत्काल।।
पद्मप्रभू जिनवर पदपद्म, पूजत पाऊँ निज सुखसद्म।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला द्राक्ष बदाम, पूजत हो निज में विश्राम।।
पद्मप्रभू जिनवर पदपद्म, पूजत पाऊँ निज सुखसद्म।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाय जजूँ जिनराज, प्रभु तुम तारण तरण जिहाज।।
पद्मप्रभू जिनवर पदपद्म, पूजत 'ज्ञानमती' सुख सद्म।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

पद्मप्रभू पदपद्म में, शांतीधार करंत।
चउसंघ में भी शांति हो, मिले भवोदधि अंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

लाल कमल नीले कमल, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–चौबोल छंद –

कौशाम्बी नगरी के राजा, धरण राज के आंगन ही।
वर्षे रतन सुसीमा माता, हर्षी गर्भ बसे प्रभुजी।।

माघकृष्ण छठ तिथि उत्तम थी, इन्द्रों ने यँह आ करके।
गर्भ महोत्सव किया मुदित हो, हम भी पूजें रुचि धरके।।1।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठ्यां श्रीपद्मप्रभतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक कृष्णा तेरस तिथि में, पद्मप्रभू ने जन्म लिया।
इन्द्राणी माँ के प्रसूतिगृह, जाकर शिशु का दर्श किया।।
सुरपति जिन शिशु गोद में लेकर, रूप देख नहिं तृप्त हुआ।
नेत्र हजार बना करके प्रभु, दर्शन कर अति मुदित हुआ।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां श्रीपद्मप्रभतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मृति से विरक्त होकर, कार्तिक कृष्णा तेरस में।
निवृति करि पालकी सजाकर, इन्द्र सभी आये क्षण में।।
सुभग मनोहर वन में पहुँचे, प्रभु ने दीक्षा स्वयं लिया।
बेला कर ध्यानस्थ हो गये, जजत मिले वैराग्य प्रिया।।3।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां श्रीपद्मप्रभतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र सुदी पूनम तिथि शुभ थी, नाम मनोहर वन उत्तम।
शुक्लध्यान से घात घातिया, केवलज्ञान हुआ अनुपम।।
सुरपति ऐरावत गज पर चढ़, अगणित विभव सहित आये।
गजदंतों सरवर कमलों पर, अप्सरियाँ जिनगुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापूर्णिमायां श्रीपद्मप्रभतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि चौथ तिथी सायं, प्रभु सम्मेदशिखर गिरि से।
एक हजार मुनी के संग में, मुक्ति राज्य पाया सुख से।।
इन्द्र असंख्यों देव देवियों, सहित जहाँ आये तत्क्षण।
प्रभु निर्वाण कल्याणक पूजें, जजूँ भक्ति से मैं इस क्षण।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्थ्यां श्रीपद्मप्रभतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा)–

श्री पद्मप्रभ पदकमल, शिवलक्ष्मी के धाम।
पूजूँ पूरण अर्घ्य ले, मिले निजातम धाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—**ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय नमः।**

अथ 108 अर्घ्य

–दोहा–

पद्मप्रभ जिनराज के, चरणकमल नत शीश।
पुष्पांजलि से मैं जजूं, प्रभु तुम त्रिभुवन ईश।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शालिनी छंद–

'दिग्वासा' हो वस्त्र दिश् ही तुम्हारे।
ऐसी मुद्रा हो कभी नाथ मेरी।।
श्रद्धा से मैं जजूं पद्मप्रभु को।
दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं दिग्वाससे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी सुन्दर 'वातरशना' तुम्हीं हो।
धारी वायू करधनी है कटी में।।श्रद्धा.।।2।।

ॐ ह्रीं वातरशनाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'निर्ग्रंथेश' हो बाह्य अंतः।
चौबीसों ही ग्रन्थ में मुक्त मानें।।श्रद्धा.।।3।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रंथेशाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी भूमी पे 'दिगम्बर' तुम्हीं हो।
धारा अम्बर दिक्मयी शील पूरे।।श्रद्धा.।।4।।

ॐ ह्रीं दिगम्बराय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्किंचन' हो नाथ सर्वस्व त्यागा।
आत्मांनते सद्गुणों से भरी है।।श्रद्धा.।।5।।

ॐ ह्रीं निष्किंचनाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा त्यागी हो 'निराशंस' स्वामी।
आशा मेरी पूरिये सिद्धि पाऊँ।।श्रद्धा.।।6।।

ॐ ह्रीं निराशंसाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी ज्ञान ही नेत्र पाया।
स्वामी मेरे 'ज्ञानचक्षू' तुम्हीं हो।।श्रद्धा.।।7।।

ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुषे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशा मोहारी 'अमोमुह' कहाये।
स्वामी मेरे मोह रागादि नाशो।।श्रद्धा.।।8।।

ॐ ह्रीं अमोमुहाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोराशी' तेज के पुंज स्वामी।
चंदा से भी सौम्य शीतल भये हो।।श्रद्धा.।।9।।

ॐ ह्रीं तेजोराशये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंते ओजस्वी 'अनंतौज' स्वामी।
मेरी शक्ति को बढ़ा दो सभी ही।।श्रद्धा.।।10।।

ॐ ह्रीं अनंतौजसे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'ज्ञानाब्धी' ज्ञान के सिंधु स्वामी।
स्वामी मेरे ज्ञान को पूर्ण कीजे।।श्रद्धा.।।11।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाब्धये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीलों से भृत 'शीलसागर' तुम्हीं हो।
अठरा साहस्र शील को पूरिये भी।।श्रद्धा.।।12।।

ॐ ह्रीं शीलसागराय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोमय' हो नाथ! तेजः स्वरूपी।
आत्मा तेजोरूप मेरी करो भी।।श्रद्धा.।।13।।

ॐ ह्रीं तेजोमयाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमितज्योती' आप ज्योति अनंती।
मेरी आत्मा ज्योति से पूर दीजे।।
श्रद्धा से मैं जजूँ पद्मप्रभु को।
दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं अमितज्योतिषे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्योतिर्मूर्ती' ज्योतिमय देह धारा।
मेरे घट में ज्ञान ज्योति भरीजे।।श्रद्धा.।।15।।

ॐ ह्रीं ज्योतिर्मूर्तये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहारी हन के 'तमोपह' तुम्हीं हो।
मेरे चित्त का सर्व अज्ञान नाशो।।श्रद्धा.।।16।।

ॐ ह्रीं तमोपहाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल 'जगच्चूड़ामणी' आप ही हो।
तीनों लोकों के शिखारत्न स्वामी।।श्रद्धा.।।17।।

ॐ ह्रीं जगच्चूड़ामणये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देदीप्यात्मा 'दीप्त' स्वामी तुम्हीं हो।
मेरी आत्मा दीप्त कीजे गुणों से।।श्रद्धा.।।18।।

ॐ ह्रीं दीप्ताय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंवान्' स्वामी सौख्य शांती तुम्हीं में।
मेरी आत्मा सौख्य से पूर्ण कीजे।।श्रद्धा.।।19।।

ॐ ह्रीं शंवते श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी मेरे 'विघ्नवीनायका' हो।
मेरे विघ्नों को हरो नाथ! जल्दी।।श्रद्धा.।।20।।

ॐ ह्रीं विघ्नविनायकाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोकों में 'कलिघ्ना' तुम्हीं हो।
मेरे कलिमल नाश के सौख्य दीजे।।श्रद्धा.।।21।।

ॐ ह्रीं कलिघ्नाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे स्वामी 'कर्मशत्रुघ्न' ही हो।
दुष्कर्मों को नष्ट कीजे प्रभू जी।।श्रद्धा.।।22।।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'लोकालोक प्रकाशक' जिनेशा।
देखा तीनों लोक अलोक भी तो।।श्रद्धा.।।23।।

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशकाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जागे आत्मा में 'अनिद्रालु' स्वामी।
मेरी आत्म मोह निद्रा तजे भी।।श्रद्धा.।।24।।

ॐ ह्रीं अनिद्रालवे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलस नाशा हो 'अतन्द्रालु' स्वामी।
मेरी आत्मा ज्ञान से स्वस्थ होवे।।श्रद्धा.।।25।।

ॐ ह्रीं अतन्द्रालवे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–लोलतरंग छंद–

जाग्रत संतत 'जागरूक' हो।
मोह कि नींद हरो तुम ध्याऊँ।।
पद्मप्रभू प्रणमूं मन लाके।
आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।26।।

ॐ ह्रीं जागरूकाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रमामय' ज्ञानमयी हो।
ज्ञान गुणाधिक हो मुझ आत्मा।।पद्म.।।27।।

ॐ ह्रीं प्रमामयाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्! 'लक्ष्मीपति' जग में हो।
नंत चतुष्टय श्रीपति जिन हो।।पद्म.।।28।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीपतये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जगज्ज्योती' कहलाये।
ज्योति भरो तम को हर लीजे।।पद्म.।।29।।

ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म दयापति 'धर्मराज' हो।
नाथ हृदे मुझ धर्म विराजे।।
पद्मप्रभू प्रणमूं मन लाके।
आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।30।।

ॐ ह्रीं धर्मराजाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रजाहित' सर्व प्रज्ञा की।
पालन रीति नृपाल सिखायी।।पद्म.।।31।।

ॐ ह्रीं प्रजाहिताय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'मुमुक्षु' कहें मुनि ज्ञानी।
इच्छुक कर्म अरी सब छूटें।।पद्म.।।32।।

ॐ ह्रीं मुमुक्षवे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बंधमोक्षज्ञा' हो तुम स्वामी।
जानत बंध रु मोक्ष विधी को।।पद्म.।।33।।

ॐ ह्रीं बंधमोक्षज्ञाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जिताक्ष' जिता पण इंद्री।
जीत सकें विषयों को हम भी।।पद्म.।।34।।

ॐ ह्रीं जिताक्षाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'जितमन्मथ' काम विजेता।
काम अरी मुझ मार भगावो।।पद्म.।।35।।

ॐ ह्रीं जितमन्मथाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रशांतरसशैलुष' हो।
किया प्रदर्शन शांतिरसों का।।पद्म.।।36।।

ॐ ह्रीं प्रशांतरसशैलूषाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भव्यनपेटकनायक' मानें।
भव्य समूह कहें तुम स्वामी।।पद्म.।।37।।

ॐ ह्रीं भव्यपेटकनायकाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म प्रधान कहा युग आदी।
'मूलसुकर्ता' आप बखाने।।पद्म.।।38।।

ॐ ह्रीं मूलकर्त्रे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पदारथ पूर्ण प्रकाशा।
नाथ! 'अखिलज्योती' सुर गाते।।पद्म.।।39।।

ॐ ह्रीं अखिलज्योतिषे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'मलघ्न' सभी मल हाने।
सर्व अघों मल नाश करो मे।।पद्म.।।40।।

ॐ ह्रीं मलघ्नाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मूलसुकारण' मुक्ति सुपथ के।
नाथ! मुझे शिवमार्ग दिखा दो।।पद्म.।।41।।

ॐ ह्रीं मूलकारणाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आप्त' यथारथ देव तुम्हीं हो।
नाथ! तपोनिधि दो सुखदाता।।पद्म.।।42।।

ॐ ह्रीं आप्ताय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'वागीश्वर' दिव्यधुनी के।
लोल तरंग वचोऽमृत गंगा।।पद्म.।।43।।

ॐ ह्रीं वागीश्वराय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'श्रेयान्' प्रभो! श्रिय दाता।
अंतर बाहिर श्री मुझको दो।।पद्म.।।44।।

ॐ ह्रीं श्रेयसे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रायसउक्ति' हितंकर वाणी।
नाथ! मुझे निज रत्नत्रयी दो।।पद्म.।।45।।

ॐ ह्रीं श्रायसोक्तये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सार्थकवाच 'निरुक्तवाक्' हो।
आप धुनी मन शांति करेगी।।पद्म.।।46।।

ॐ ह्रीं निरुक्तवाचे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रवक्ता' श्रेष्ठ वचों से।
धर्मसुधा बरसा जन तोषा।।
पद्मप्रभू प्रणमूं मन लाके।
आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।47।।

ॐ ह्रीं प्रवक्त्रे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम्हीं 'वचसामिश' मानें।
धर्म वचन के ईश्वर ही हो।।पद्म.।।48।।

ॐ ह्रीं वचसामीशाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मारजीता' प्रभु कामजयी हो।
सर्व मनोरथ पूर्ण करो जी।।पद्म.।।49।।

ॐ ह्रीं मारजिते श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वभाववित्' तीन जगत् को।
जान लिया मुझ ज्ञान सुधा दो।।पद्म.।।50।।

ॐ ह्रीं विश्वभावविदे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–त्रिभंगी छंद–

हे नाथ 'सुतनु' हो, उत्तमतनु हो, अतिशय दीप्ती, धारक हो।
हन आधी व्याधी, मेट उपाधी, पूर्ण निरामय कारक हो।।
हे पद्मप्रभू तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।51।।

ॐ ह्रीं सुतनवे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु देहरहित हो, ज्ञानदेह हो, 'तनुनिर्मुक्त' कहाते हो।
तनु बंधन काटूं, अघ अरि पाटूं, भवितनुमल, को नाशे हो।।हे.।।52।।

ॐ ह्रीं तनुनिर्मुक्तये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगत' तुम्हीं हो, अधर गमन हो, आत्मरूप में लीन रहे।
मुझ सुगति करोगे, सौख्य भरोगे, दो शक्ति शिवमार्ग लहें।।हे.।।53।।

ॐ ह्रीं सुगताय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'हतदुर्नय' हो, स्वयं सुनय हो, मिथ्यानय को दूर किया।
जो नहिं निरपेक्षी, नित सापेक्षी, सम्यक्नय का कथन किया।।
हे पद्मप्रभू.।।54।।

ॐ ह्रीं हतदुर्नयाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम्हीं 'श्रीश' हो, मुक्ति ईश हो, अंतर बाहिर लक्ष्मी से।
श्री आदि देवियां, मात सेविया, तुम महिमा सुर भक्ती से।।
हे पद्मप्रभू.।।55।।

ॐ ह्रीं श्रीशाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री-लक्ष्मी सेवित, चरणकमलयुग, प्रभु 'श्रीश्रितपादाब्ज' तुम्हीं।
धन लक्ष्मी इच्छुक, भविजन अर्चत, सभी सौख्य श्री देत तुम्हीं।।
हे पद्मप्रभू.।।56।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'वीतभी', प्राप्त अभयधी, भविजन को निर्भीक करो।
हत जन्म मरण भय, शिवपद निर्भय, देकर मुझ भय शीघ्र हरो।।
हे पद्मप्रभू.।।57।।

ॐ ह्रीं वीतभिये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन 'अभयंकर' जग क्षेमंकर, भव्य हितंकर आप कहे।
मेरे दुख टारो, भव निरवारो, मुझ आत्मा निज सौख्य लहे।।
हे पद्मप्रभू.।।58।।

ॐ ह्रीं अभयंकराय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उत्सन्नादोष' हो, रत्नकोश हो, सब दोषों को दूर किया।
मुझ दोष दूर हों, सौख्य पूर हो, इस आशा से शरण लिया।।
हे पद्मप्रभू.।।59।।

ॐ ह्रीं उत्सन्नदोषाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विघ्न विरहिते, मंगल सहिते, कर्म हते, निर्विघ्न भये।
मुझ शिवमारग में, दिन प्रतिदिन में, विघन घने, तुम जजत गये।।
हे पद्मप्रभू.।।60।।

ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अतिशय सुस्थिर, ज्ञान चराचर, मुनिगण 'निश्चल' तुमहिं कहें।
मुझ चित्त विमल हो, ध्यान अचल हो, पद भी निश्चल शीघ्र लहें।।
हे पद्मप्रभू तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।61।।

ॐ ह्रीं निश्चलाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमपद प्रीती, सुद्गुण नीती, हरत अनीती, प्रेम भरे।
तुम 'लोकसुवत्सल', हरत करम मल, भरत महाबल, नेह धरें।।
हे पद्मप्रभू.।।62।।

ॐ ह्रीं लोकवत्सलाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'लोकोत्तर' सर्व अनुत्तर, नमत सुरासुर, भविक भजें।
जो तुमपद ध्यावें, निज सुख पावें, कर्म नशावें, सुगुण सजें।।
हे पद्मप्रभू.।।63।।

ॐ ह्रीं लोकोत्तराय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकपति' हो, त्रिजग अधिप हो, भवि रक्षक हो, त्रिभुवन में।
अतिशय सुखदाता, हरत असाता, मोक्ष विधाता, मुनिगण में।।
हे पद्मप्रभू.।।64।।

ॐ ह्रीं लोकपतये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भविक नयन हो, 'लोकचक्षु' हो, जगत लखत हो, प्रतिक्षण में।
मुझ ज्ञाननेत्र दो, भ्रम तम हर दो, निज रुचि भर दो, रग रग में।।
हे पद्मप्रभू.।।65।।

ॐ ह्रीं लोकचक्षुषे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'अपारधी', अनवधिबुद्धी, हरत कुबुद्धी, ज्ञानमयी।
मुझ कुमति हटा दो, सुमति बढ़ा दो, मोह मिटा दो, दुःखमयी।।
हे पद्मप्रभू.।।66।।

ॐ ह्रीं अपारधिये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'धीरधी' सुस्थिर बुद्धी, अतुलित बुद्धी, महामना।
मुझ ज्ञान विमल हो, सौख्य अमल हो, जन्म सफल हो, धर्मघना।।
हे पद्मप्रभू.।।67।।

ॐ ह्रीं धीरधिये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भवदधि पारग, भवि शिवमारग, आप 'बुद्धसन्मार्ग' कहे।
पथ स्वयं चले हो, कहत भले हो, तुमसे ही, जन मार्ग लहें।।
हे पद्मप्रभू.।।68।।

ॐ ह्रीं बुद्धसन्मार्गाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'शुद्ध' हो, स्वात्मसिद्ध हो, भविजन शुद्ध, बने तुमसे।
मुझ कलिमल नाशो, आत्म प्रकाशो, मन में भासो, नमुं रुचि से।।
हे पद्मप्रभू.।।69।।

ॐ ह्रीं शुद्धाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सत्यपवित्रा, वचन धरित्रा, 'सत्यसूनृतवाक्' तुम्हीं।
तुम वचन औषधी, सर्व औषधी, मेटत जामन मरण मही।।
हे पद्मप्रभू.।।70।।

ॐ ह्रीं सत्यसूनृतवाचे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरमसीम पे, बुद्धी पहुँचे, 'प्रज्ञापारमिता' तुम हो।
मुझ ज्ञान अल्पश्रुत, बने पूर्ण श्रुत, ज्ञान ध्यान शिव कारक हो।।
हे पद्मप्रभू.।।71।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमिताय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्राज्ञ' कहाये, मोह नशाये, सुरगण गायें, गुण नित ही।
मुझ विद्यादाता, दो सुखसाता, हरो असाता, हो सुख ही।।
हे पद्मप्रभू.।।72।।

ॐ ह्रीं प्राज्ञाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विषय विरत हो, स्वात्म निरत हो, महाव्रतिक हो, 'यति' तुमही।
इंद्रिय विषयन को, कषाय गण को, दूर करो जो, दुखद मही।।
हे पद्मप्रभू.।।73।।

ॐ ह्रीं यतये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु! 'नियमित इंद्रिय' जित पण इंद्रिय, जीत लिया हिय, जिन तुमही।
मुझ इंद्रिय मन की, जीतन शक्ती, दीजे युक्ती, नमित मही।।
हे पद्मप्रभू तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।74।।

ॐ ह्रीं नियमितेन्द्रियाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन् ! 'भदंत' तुम, पूज्य कहें मुनि, सुरनर यतिगण, तुम वंदे।
हम तज बहिरात्मा, अंतर आत्मा, हों परमात्मा गुण मंडे।।
हे पद्मप्रभू.।।75।।

ॐ ह्रीं भदंताय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पृथ्वी छंद–

प्रभो! तुमहिं 'भद्रकृत्' सकल लोक कल्याणकृत्।
नमूँ अतुल भक्ति से त्वरित सौख्य दीजे मुझे।।
जजूँ सतत आप मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।76।।

ॐ ह्रीं भद्रकृते श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुमहिं 'भद्र' हो सकल जीव श्रेयस् करो।
अमंगल हरो सदा अखिल विश्व मंगल करो।।जजूँ.।।77।।

ॐ ह्रीं भद्राय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुमहिं 'कल्पवृक्ष' मन चाहि वांछा भरो।
अतः सकल भव्यजीत नित भक्ति से पूजते।।जजूँ.।।78।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वरप्रद' जिनेशा एक वरदान दे दीजियें
मिले तुरत सिद्धिधाम बस और ना चाहिये।।जजूँ.।।79।।

ॐ ह्रीं वरप्रदाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! यम नाश के 'समुन्मूलिता कर्म अरि' हो।
उखाड़ जड़मूल से करम शत्रु नाशा तुम्हीं।।जजूँ.।।80।।

ॐ ह्रीं समुन्मूलितकर्मारिये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! तुम 'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणी' लोक में।
समस्त अठ कर्म इंधन जलावते अग्नि हो।।जजूँ.।।81।।
ॐ ह्रीं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त शिव कार्य में निपुण आप 'कर्मण्य' हो।
प्रभो! निमित्त आप पाय सब कार्य मेरे बनें।।जजूँ.।।82।।
ॐ ह्रीं कर्मण्याय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त कर्मारि के हनन में सुमामर्थ्य है।
अतेव 'कर्मठ' तुम्हीं सकल कार्य में दक्ष हो।।जजूँ.।।83।।
ॐ ह्रीं कर्मठाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समर्थ प्रभु आप ही सतत 'प्रांशु' सर्वोच्च भी।
समस्त अघ नाश के सकल सौख्य संपद् भरो।।जजूँ.।।84।।
ॐ ह्रीं प्रांशवे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! बस आप 'हेयआदेयवीचक्षणः'।
हिताहित विचारशील तुम सा नहीं अन्य है।।जजूँ.।।85।।
ॐ ह्रीं हेयादेयविचक्षणाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त जग जानते प्रभु 'अनंतशक्ती' तुम्हीं।
अनंत गुण पूरिये हृदय में सदा राजिये।।जजूँ.।।86।।
ॐ ह्रीं अनंतशक्तये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न छिन्न भिन्न हों कभी प्रभु सदैव 'अच्छेद्य' हो।
मुझे स्वपर ज्ञान हो स्वयम् ही स्वयंभू बनूँ।।जजूँ.।।87।।
ॐ ह्रीं अच्छेद्याय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'त्रिपुरारि' हो त्रिविध कर्म को नाश के।
जरा जनम मृत्यु तीन पुर नाश कीने तुम्हीं।।जजूँ.।।88।।
ॐ ह्रीं त्रिपुरारये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिलोचन' त्रिकालवर्ति सब वस्तु को देखते।
जिनेन्द्र! श्रुतज्ञान से विमल स्वात्म चिंतन करूँ।।जजूँ.।।89।।
ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिनेत्र' तुम जन्म से मति श्रुतावधी ज्ञानि थे।
पुनः त्रिजग देख के सकल ज्ञानधारी भये।।
जजूँ सतत आप मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।90।।
ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक पितु आप 'त्र्यंबक' कहें मुनीनाथ भी।
मुझे भी प्रभु पालिये निजगुणादि से पूरिये।।जजूँ.।।91 ।।
ॐ ह्रीं त्र्यंबकाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'त्र्यक्ष' हो सतत रत्नत्रैरूप हो।
मुझे भि त्रय रत्न दो सकल लोक स्वामी बनूँ।।जजूँ.।।92।।
ॐ ह्रीं त्र्यक्षाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वघाति चउ नाश 'केवलज्ञानवीक्षण' बनें।
विघात घन घाति मैं सकल ज्ञान पाऊँ प्रभो।।जजूँ.।।93।।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'समंतभद्र' सब ओर मंगलमयी।
अमंगल हरो सभी भुवन में सुमंगल करो।।जजूँ.।।।94।।
ॐ ह्रीं समंतभद्राय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! सकल शत्रु शांतकर आप 'शांतरि' हो।
मुझे करम शत्रु शांतकर शक्ति दे दीजिये।।जजूँ.।।95।।
ॐ ह्रीं शांतारये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुधर्म संस्थाप के तुमहि 'धर्माचार्य' हो।
प्रभो सकल विश्व में सदय[1] धर्मनेता तुम्हीं।।जजूँ.।।96।।
ॐ ह्रीं धर्माचार्याय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दयानिधि' तुम्हीं सभी जन दया के भंडार हो।
दयालु मुझपे दया अब करो दुखी जान के।।जजूँ.।।97।।
ॐ ह्रीं दयानिधये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. दया सहित।

पदार्थ सब सूक्ष्म भी लखत 'सूक्ष्मदर्शी' प्रभों
मुझे अतुल शक्ति दो सकल लोक अलोक[1] लूँ।।जजूँ.।।98।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिने श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वकाम अरि-जीत के प्रभु तुम्हीं 'जितानंग' हो।
अभीप्सित सुपूरिये विषय काम को नाश के।।जजूँ.।।99।।

ॐ ह्रीं जितानंगाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृपालु' करके कृपा सकल पाप को नाशिये।
अनंत सुख दीजिये भुवन शीश पे थापिये।।जजूँ.।।100।।

ॐ ह्रीं कृपालवे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! भुवि 'धर्मदेशक' तुम्हीं सुधर्माब्धि हो।
मुझे स्वपर भेदज्ञानमय धर्म दीजे अबे।।जजूँ.।।101।।

ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभंयु' शुभ युक्त हो प्रभु सुखामृताम्भोधि हो।
मुझे शुभमयी करो तुरत शुद्ध आत्मा बने।।जजूँ.।।102।।

ॐ ह्रीं शुभंयवे श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'सुखसाद्‌भूत' अनुपं सुखाधीन हो।
अनंत सुख दो मुझे गुणसमूह से पूर्ण जो।।जजूँ.।।103।।

ॐ ह्रीं सुखसाद्‌भूताय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! तुम 'पुण्यराशि' शुभ पुण्य भंडार हो।
पवित्र निज को किया मुझ पवित्र आत्मा करो।।जजूँ.।।104।।

ॐ ह्रीं पुण्यराशये श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनामय' प्रभो! तुम्हें सकल व्याधि पीड़ा नहीं।
समस्त तनु रोग नाश भव व्याधि मेरी हरो।।जजूँ.।।105।।

ॐ ह्रीं अनामयाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! तुम 'धर्मपाल' जिन धर्म को रक्षते।
अनंत जिनधर्म हे हृदय में विराजो सदा।।जजूँ.।।106।।

ॐ ह्रीं धर्मपालाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. देख लूँ।

प्रभो! 'जगत्पाल' हो भुवन प्राणि को रक्षते।
मुझे सतत रक्षिये जगपते! मनोरक्ष हो।।
जजूँ सतत आप मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।107।।

ॐ ह्रीं जगत्पालाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! जगमध्य 'धर्मसाम्राजनायक' तुम्हीं।
सुमोक्षप्रद सार्वभौम जिनधर्म के ईश हो।।जजूँ.।।108।।

ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–शंभु छंद–

दिग्वासादिक नाम एक सौ, आठ आपके सुरपति गाते।
नाममंत्र को मन में ध्याकर, योगीजन निज संपति पाते।।
मैं भी प्रतिक्षण पद्मप्रभु को, हृदय कमल में धारण कर लूँ।
प्रभु ऐसी दो शक्ती मुझको, तुम भक्ती से भवदधि तर लूँ।।1।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादि–अष्टोत्तरशतमंत्रसमन्विताय श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय नमः।

(108 बार या 27 बार सुगन्धित पुष्प से, लौंग से या पीले चावलों से जाप्य करें)

जयमाला

–दोहा –

श्रीपद्मप्रभु गुणजलधि, परमानंद निधान।
गाऊँ गुणमणि मालिका, नमूँ नमूँ सुखदान।।1।।

–चामरछंद–

देव देव आपके पदारविंद में नमूँ।
मोह शत्रु नाश के समस्त दोष को वमूँ।।
नाथ! आप भक्ति ही अपूर्व कामधेनु है।
दुःखवार्धि से निकाल मोक्ष सौख्य देन है।।2।।

जीव तत्त्व तीन भेद रूप जग प्रसिद्ध है।
बाह्य अंतरातमा व परम आत्म सिद्ध हैं।।
मैं सुखी दुःखी अनाथ नाथ निर्धनी धनी।
इष्ट मित्र हीन दीन आधि व्याधियाँ घनी।।3।।

जन्म मरण रोग शोक आदि कष्ट देह में।
देह आत्म एक है अतेव दुःख हैं घने।।
आतमा अनादि से स्वयं अशुद्ध कर्म से।
पुत्र पुत्रियाँ कुटुंब हैं समस्त आत्म के।।4।।

मोह बुद्धि से स्वयं बहीरात्मा कहा।
अंतरातमा बने जिनेन्द्र भक्ति से अहा।।
मैं सदैव शुद्ध सिद्ध एक चित्स्वरूप हूँ।
शुद्ध नय से मैं अनंत ज्ञान दर्शरूप हूँ।।5।।

आप भक्ति के प्रसाद शुद्ध दृष्टि प्राप्त हो।
आप भक्ति के प्रसाद दर्श मोह नाश हो।।
आप भक्ति के प्रसाद से चरित्र धार के।
जन्मवार्धि से तिरूँ प्रभो! सुभक्ति नाव से।।6।।

दो शतक पचास धनुष तुंग आप देह है।
तीस लाख वर्ष पूर्व आयु थी जिनेश हे।।
पद्मरागमणि समान देह दीप्तमान है।
लालकमल चिन्ह से हि आपकी पिछान है।।7।।

वज्र चामरादि एक सौ दशे गणाधिपा।
तीन लाख तीस सहस साधु भक्ति में सदा।।
चार लाख बीस सहस आर्यिकाएँ शोभतीं।
तीन रत्न धार के अनंत दुःख धोवतीं।।8।।

तीन लाख श्रावक पण लाख श्राविका कहे।
जैन धर्म प्रीति से असंख्य कर्म को दहें।।
एकदेश संयमी हो देव आयु बांधते।
सम्यक्त्व रत्न से हि वो अनंत भव निवारते।।9।।

धन्य आज की घड़ी जिनेन्द्र अर्चना करूँ।
पद्मप्रभ की भक्ति से यमारि खंडना करूँ।।
राग द्वेष शत्रु की स्वयंहि वंचना करूँ।
"ज्ञानमती" ज्योति से अपूर्व संपदा भरूँ।।10।।

–दोहा–

धर्मामृतमय वचन की, वर्षा से भरपूर।
मेरे कलिमल धोय के, भर दीजे सुखपूर।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद–

जो पद्मप्रभतीर्थेश की, अर्चा करें अति भाव से।
वे मन कमल विकसित करें, सम्यक्त्वज्योति प्रभाव से।।
संसारसागर पार करके, स्वात्मनिधि को पावते।
'सज्ज्ञानमति' रवि किरण से, त्रिभुवन त्रिकाल प्रकाशते।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–नरेन्द्र छंद –

तीर्थंकर के चरण कमल में, झुक-झुक शीश नमाऊँ।
सरस्वती का वंदन करके, त्रिविध साधु गुण गाऊँ।।
चौबीसों तीर्थंकर जिनवर, मंगल कर्ता जग में।
पद्मप्रभ जिनवर विधान यह, रचा सौख्यकर मैंने।।1।।

मूलसंघ में कुंदकुंद, आम्नाय प्रसिद्ध हुआ है।
गच्छ सरस्वति बलात्कार गण, इसमें मान्य हुआ है।।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, आचार्य शांतिसागर जी।
इनके प्रथम शिष्य पट्टाधिप, गुरू वीरसागर जी।।2।।

मुझे आर्यिका दीक्षा देकर, ज्ञानमती कर जग में।
ज्ञानामृत कण से पावन कर, सार्थक नाम दिया मे।।
तीर्थंकर भक्ती प्रसाद से, देव-शास्त्र-गुरु भक्ती।
मिली आत्मनिधि त्रिभुवन उत्तम, प्राप्त करन की शक्ती।।3।।

महावीर शासन इस जग में, जब तक मंगलमय हो।
हस्तिनागपुर में सुमेरु सह, जम्बूद्वीप स्थिर हो।।
कौशाम्बी प्रभु जन्मभूमि है, शिपपथदायी जब तक।
तब तक गणिनी ज्ञानमती कृति, जग में हो मंगलप्रद।।4।।

–दोहा –

श्री पद्मप्रभ तीर्थकर, सर्व सौख्य दातार।
नमूं नमूं नित भक्ति से, पाऊं निज सुखसार।।5।।

।।इति शं भूयात्।।

पूजा नं. 3

कौशाम्बी तीर्थ पूजा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज- आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं......

पदमचिन्ह युत पदमप्रभू की, जन्मभूमि वन्दना करें।
कौशाम्बी शुभ तीर्थ ऐतिहासिक, की हम अर्चना करें।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्।।टेक.।।

कौशाम्बी में धरणराज की, रानी एक सुसीमा थीं।
जिनके सुख वैभव की धरती, पर नहिं कोई सीमा थी।।
इन्द्रों द्वारा पूज्य वहाँ की, पावन रज वन्दना करें।
कौशाम्बी शुभ तीर्थ ऐतिहासिक, की हम अर्चना करें।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्।।1।।

चार कल्याणक पदमप्रभू के, इन्द्र ने यहीं मनाये हैं।
हम उनकी पूजा हेतु, आह्वानन करने आये हैं।।
यमुना तट पर बसे तीर्थ की, मुनिगण भी वंदना करें।
कौशाम्बी शुभ तीर्थ ऐतिहासिक, की हम अर्चना करें।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टकं- (शंभु छन्द)

जब-जब काया पर मैल चढ़ा, मैंने जल से स्नान किया।
निज मन का मैल हटाने को, तीरथ के लिए प्रस्थान किया।।

कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब दुर्गन्ध मिली मुझको, मैं द्रव्य सुगंधित ले आया।
अब आत्मसुगंधी पाने को, चन्दन मलयागिरि घिस लाया।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जब जब मुझ पर संकट आया, मैंने कुदेव की शरण लिया।
अब ज्ञान मिला तो अक्षत ले, अक्षय पद हेतु समर्प्य दिया।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब विषयों की आश जगी, भोगों में सुख मैंने माना।
अब ज्ञान मिला तो पुष्पों से, प्रभु पूजन करने को ठाना।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब काया को भूख लगी, स्वादिष्ट सरस व्यंजन खाया।
अब ज्ञान हुआ तो व्यंजन का, भर थाल अर्चना को लाया।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब देखा कुछ अंधकार, विद्युत प्रकाश को कर डाला।
अब जाना प्रभु आरति करके, मिलता है अन्तर उजियाला।।

कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब निद्रा मैंने चाही, कमरे में धूप जलाया है।
अब जाना असली तथ्य अतः, पूजन में उसे चढ़ाया है।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब कोई भी फल देखा, खाने की इच्छा प्रबल हुई।
अब जाना तथ्य मोक्ष फल का, तो पूजन इच्छा प्रबल हुई।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब मैंने आठों द्रव्यों का, स्वर्णिम थाल सजाया है।
तब-तब मैंने "चन्दनामती", लोकोत्तर वैभव पाया है।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

यूँ तो जल कितना बहता है, उसकी नहिं कुछ सार्थकता है।
पूजन में प्रासुक जल से, जलधारा की ही सार्थकता है।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।10।।

शांतये शांतिधारा

यूँ तो उपवन में फूल, बहुत गिरते मुरझाते रहते हैं।
प्रभु सम्मुख पुष्पांजलि करके, उनके भी भाग्य निखरते हैं।।

कौशाम्बी नगरी पद्मप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

कौशाम्बी तीर्थ के अर्घ्य (शेर छन्द)

जहाँ माघ कृष्णा छठ गरभ कल्याण हुआ था।
माता सुसीमा को हरष अपार हुआ था।।
राजा धरण की नगरी में इन्द्र थे आये।
उस तीर्थ कौशाम्बी को सभी अर्घ्य चढ़ायें।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभगर्भकल्याणकपवित्रकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदी तेरस को जहाँ प्रभु जनम हुआ।
इन्द्राणी ने प्रसूतिगृह में जा दरश किया।।
सुरपति ने प्रभु को गोद में ले नृत्य था किया।
उस जन्मभूमि के लिए अब अर्घ्य मैं दिया।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मकल्याणकपवित्रकौशाम्बी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मरण से प्रभु जहाँ विरक्त हुए थे।
कार्तिक वदी तेरस को वे निवृत्त हुए थे।।
कौशाम्बि में प्रभासगिरि पे दीक्षा ले लिया।
अतएव अर्घ्य मैंने तीर्थ को चढ़ा दिया।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभदीक्षाकल्याणकपवित्रकौशाम्बी-अन्तर्गतप्रभासगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तप कर जहाँ प्रभु घातिया कर्मों को नशाया।
शुभ चैत्र सुदि पूनम तिथी कैवल्य को पाया।।
धनपति ने आ तुरन्त समवसरण बनाया।
अतएव पभौषा को मैंने अर्घ्य चढ़ाया।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रकौशाम्बी-अन्तर्गतप्रभासगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य–दोहा

चार कल्याणक से सहित, पावन तीर्थ महान।
कौशाम्बी व प्रभासगिरि, को दूँ अर्घ्य महान।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभगर्भजन्मतपज्ञानचतुःकल्याणकपवित्रकौशाम्बी-प्रभासगिरितीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं कौशाम्बीजन्मभूमिपवित्रीकृत–श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय नमः।

जयमाला

तर्ज-चाँद मेरे आ जा रे........

तीर्थ का अर्चन करना है-2,
श्री पद्मप्रभ की जन्मभूमि कौशाम्बी को भजना है।।
तीर्थ का.।।टेक0।।

नौका सम जो प्राणी को, भवदधि से पार लगाते।
इस धरती पर वे स्थल, ही पावन तीर्थ कहाते।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।1।।

मिश्री से मिश्रित आटा, मीठा जैसे हो जाता।
तीर्थंकर कल्याणक से, वैसे ही तीर्थ बन जाता।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।2।।

तीर्थों की इस श्रेणी में, कौशाम्बी तीर्थ है पावन।
तीर्थंकर पद्मप्रभू की, वह जन्मभूमि मनभावन।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।3।।

प्रारंभिक चार कल्याणक, पद्मप्रभु के माने हैं।
वहीं पास पपौसा तीरथ पे, तप व ज्ञान माने हैं।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।4।।

महावीर प्रभू भी आये, थे कौशाम्बी नगरी में।
आहार दिया था जहाँ पर, उनको चन्दना सती ने।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।5।।

यह अर्घ्य थाल अर्पित है, कौशाम्बी तीर्थ चरण में।
आत्मा को तीर्थ बनाने, का भाव मेरे है मन में।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।6।।

कौशाम्बी एवं उसके, नजदीक प्रभाषगिरी है।
''चन्दनामती'' दोनों ही, कल्याणक पूज्य मही हैं।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद –

जो भव्यप्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरण रज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

।।इत्याशीर्वादः।।

भगवान श्री पद्मप्रभ की आरती

तर्ज–जिया बेकरार है.........

पद्मप्रभू भगवान हैं, त्रिभुवन पूज्य महान हैं,
भक्ति भाव से आरति करें, मिटे तिमिर अज्ञान है।।टेक.।।

मात सुसीमा धन्य हो गयी, जन्म लिया जब नगरी में। जन्म.....
स्वर्ग से इन्द्र-इन्द्राणी आकर, मेरू पर अभिषेक करें।। मेरू......
कौशाम्बी शुभ धाम है, जहाँ जन्में श्री भगवान हैं।
भक्ति भाव से आरति करें, मिटे तिमिर अज्ञान है।।1।।

कार्तिक वदि तेरस शुभ तिथि थी, वैभव तृणवत छोड़ दिया। वैभव......
मुक्तिरमा की प्राप्ती हेतू, ले दीक्षा शुभ ध्यान किया।। दीक्षा.......
वह भू परम महान है, जहां दीक्षा लें भगवान हैं।
भक्ति भाव से आरति करें, मिटे तिमिर अज्ञान है।।2।।

चैत्र शुक्ल पूनो तिथि तेरी, केवलज्ञान कल्याण तिथी। केवल.......
मोहिनि कर्म का नाश किया, मिल गई प्रभो अर्हत् पदवी।। मिल.....
समवसरण सुखखान है, दिव्यध्वनि खिरी महान है।।
भक्ति भाव से आरति करें, मिटे तिमिर अज्ञान है।।3।।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी तिथि में, प्रभु कहलाए मुक्तिपती। प्रभु.......
लोक शिखर पर जाकर तिष्ठे, सदा जहां शाश्वत सिद्धी।। सदा.....
शिखर सम्मेद महान है, मुक्ति गए भगवान हैं।
भक्ति भाव से आरति करें, मिटे तिमिर अज्ञान है।।4।।

सुर नर वंदित कल्पवृक्ष प्रभु, तुम पद्मा के आलय हो।
कहे 'चंदनामती' पद्मप्रभु, भविजन सर्व सुखालय हो।।
करें सभी गुणगान है, मिले मुक्ति का दान है।।
भक्ति भाव से आरति करें, मिटे तिमिर अज्ञान है।।5।।

कौशाम्बी तीर्थ की आरती

तर्ज–क्या खूब दिखती हो.............

कौशाम्बी तीरथ की, हम आरति करते हैं-2
पद्मप्रभू की जन्मभूमि की, आरति करते हैं।
तीरथ की आरति करके, सब आरत टलते हैं।।कौशाम्बी.।।टेक.।।

नृप धरणराज पितु तेरे-हाँ हाँ तेरे,
अरु मात सुसीमा की कुक्षि से जन्मे।
इक्ष्वाकुवंश के भास्कर-हाँ हाँ भास्कर,
पद्मा के आलय, वन्दन तव पदयुग में।।
लाल कमल सम देहकान्ति, धारक को नमते हैं,
तीरथ की आरति करके, सब आरत टलते हैं।।कौशाम्बी.।।1।।

शुभ माघ वदी छठ तिथि में-हाँ हाँ तिथि में,
गर्भागम मंगल प्राप्त किया प्रभुवर ने।
कार्तिक कृष्णा तेरस थी-हाँ तेरस थी,
त्रैलोक्य विभाकर उदित हुआ भू पर ही।।
स्वर्ग से इन्द्र-इन्द्राणी आ जन्मोत्सव करते हैं,
तीरथ की आरति करके, सब आरत टलते हैं।।कौशाम्बी.।।2।।

कैवल्यज्ञान को पाया-हाँ हाँ पाया,
वह तीरथ आज प्रभाषगिरी कहलाया।
फाल्गुन कृष्णा थी चतुर्थी-हाँ हाँ चतुर्थी,
निर्वाणश्री पाया सम्मेदशिखर जी।।
नित्य निरंजन सिद्धप्रभू के पद में नमते हैं,
तीरथ की आरति करके, सब आरत टलते हैं।।कौशाम्बी.।।3।।

यहाँ इक पौराणिक घटना-हाँ हाँ घटना,
कौशाम्बी से है जुड़ी भक्ति की महिमा।
महावीर प्रभू थे आए-हाँ थे आए,
बेड़ी टूटीं चंदना सती हरषाए।।
देव वहां पंचाश्चर्यों की वृष्टी करते हैं,
तीरथ की आरति करके, सब आरत टलते हैं।।कौशाम्बी.।।4।।

तुम कल्पवृक्ष हो स्वामी-हाँ हाँ स्वामी,
चिंतामणि सम फलदायक हो गुणनामी।
हम आरति करने आए-हाँ हाँ आए,
''चंदनामती'' सब मनवांछित फल जाएं।
भक्त यही भावना प्रभू के सम्मुख करते हैं,
तीरथ की आरति करके, सब आरत टलते हैं।।कौशाम्बी.।।5।।

भजन

-आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

तर्ज–आओ बच्चों तुम्हें......

पद्मचिन्हयुत पद्मप्रभू के, श्रीचरणों में नमन करें।
कौशाम्बी के तीर्थ प्रभासगिरी को सब मिल चमन करें।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्-2।। टेक.।।

कौशाम्बी में धरणराज की, रानी एक सुसीमा थीं।
जिनके सुख वैभव की धरती पर नहिं कोई सीमा थी।।
इन्द्रों द्वारा पूज्य वहाँ की, पावन रज को नमन करें। कौशाम्बी......।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्-2 ।।1।।

चार कल्याणक पद्मप्रभू के, इन्द्र ने यहीं मनाये हैं।
आज वही कौशाम्बी और, प्रभाषगिरी कहलाये हैं।।
यमुना तट पर बसे तीर्थ पर, मुनिगण आतमरमण करें। कौशाम्बी......।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्-2 ।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती ने, इस तीरथ के दर्श किये।
मिली प्रेरणा महावीर, चन्दनबाला वहाँ प्रगट हुए।।
पद्मप्रभू की अतिशयकारी, मूर्ति 'चंदना' नमन करें। कौशाम्बी......।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्-2 ।।3।।

भजन

-आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

तर्ज–पंखिड़ा.........

पंखिड़ा तू उड़ के जाना स्वर्गपुरी में।
कहना इन्द्र से कि चलो मध्यलोक में।।पंखिड़ा......।।टेक.।।

मध्यलोक में श्री जिनवरों के नाथ जन्मे हैं।
उनके माता-पिता और तीनों लोक हरषें हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा......।।1।।

देखो मध्यलोक में ही सारे तीर्थक्षेत्र हैं।
प्रभु के मोक्ष से पवित्र यहीं सिद्धक्षेत्र हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा......।।2।।

मध्यलोक में सदा ही साधु-सन्त रहते हैं।
विश्वशांति का सदा ही वे प्रयत्न करते हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा......।।3।।

स्वर्गपुरि से देव-इन्द्र मध्यलोक आते हैं।
''चंदनामती'' वे जिनवरों के गीत गाते हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा......।।4।।